Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 4, July-2022, ISSN 2230-7540

आधुनिक काल की हिन्दी भाषा का साहित्य एवं इतिहास

अंजलि श्योकंद*

Email - sehwaganjali@gmail.com

***सार** - हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल 'भारतीय इतिहास' के बदलते हुए स्वरूप से काफ़ी प्रभावित था। 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम' और राष्ट्रीयता की भावना का प्रभाव भी साहित्य में आ गया था। भारत में औद्योगीकरण का प्रारंभ होने लगा था।भारतेंदु एवं उनके मंडल ने साहित्य को रीति प्रवृत्तियों के घेरे से बाहर निकाल कर जनता से जोड़ा।हिन्दी साहित्य पर यदि दृष्टिदृश्य में विचार किया जाता है तो स्पष्ट होता है कि हिन्दी साहित्य का इतिहास विशद रूप से प्राचीन है। सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डॉ.हरदेव बाहरी शब्दों में, हिन्दी साहित्य का इतिहास वस्तुतः वैदिक काल से प्रारम्भ होता है।हिंदी साहित्य के गद्य लेखकों में भारतेंदु हरीशचंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचंद्र शुक्ल और श्याम सुंदर दास प्रमुख हैं। जय शंकर प्रसाद, मैथलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह 'दिनकर' और हरिबंस राय 'बच्चन' ने हिंदी कविता के विकास में महान योगदान दिया।*

***कीवर्ड** - आधुनिक काल, हिन्दी भाषा, साहित्य, इतिहास*

----------X----------

1. परिचय

हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल 'भारतीय इतिहास' के बदलते हुए स्वरूप से काफ़ी प्रभावित था। 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम' और राष्ट्रीयता की भावना का प्रभाव भी साहित्य में आ गया था। भारत में औद्योगीकरण का प्रारंभ होने लगा था। आवागमन के साधनों का भी तेज़ी से विकास हुआ। अंग्रेज़ी और पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव बढ़ा और जीवन में बदलाव आने लगा। ईश्वर के साथ महत्त्व को मानव साथ-पर्याप्त को विचारों साथ-साथ के भावना था। लगा जाने दिया ग ही साथ के पद्य मिली। प्रधानताद्य का भी पर्याप्त विकास हुआ और छापेखाने के आते ही साहित्य के संसार में एक नयी क्रांति का बीजारोपण हुआ।[1]

आधुनिक हिंदी साहित्य का आरंभ 19वीं शताब्दी के आरंभ से माना जाता है। हिंदी साहित्य के इतिहास में रीतिकाल के बाद चतुर्थ काल आधुनिक काल का आता है। इसका आरंभ 1850 के आसपास से माना जाता है।यह सन भारतेंदु हरिश्चंद्र जी का जन्म काल है। उस दौरान विभिन्न आंदोलन, संघर्ष और 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम हुआ।भारतीय और यूरोपीय संस्कृति और आदर्शों के संघर्षों से भारतीय जीवन में नवजागरण का स्पंदन प्रारंभ हुआ था। इस कारण भारतेंदु युग को पुनर्जागरण काल भी करते हैं। आधुनिक हिंदी साहित्य का आरंभ भारतेंदु युग से माना जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के युग प्रवर्तक एवं मील के पत्थर कहे जाते हैं। आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रवर्तन में भारतेंदु जी की भूमिका अग्रणी है। भारतेंदु एवं उनके मंडल ने साहित्य को रीति प्रवृत्तियों के घेरे से बाहर निकाल कर जनता से जोड़ा।आधुनिक काल को आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने गद्य काल के नाम से अभिहित किया है।[2]

2. हिन्दी भाषा का साहित्य एवं इतिहास

हिन्दी साहित्य पर यदि दृष्टिदृश्य में विचार किया जाता है तो स्पष्ट होता है कि हिन्दी साहित्य का इतिहास विशद रूप से प्राचीन है। सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डॉ 0 हरदेव बाहरी शब्दों में, हिन्दी साहित्य का इतिहास वस्तुतः वैदिक काल से प्रारम्भ होता है। यह कहना ठीक होगा कि वैदिक भाषा ही हिन्दी है। इस भाषा का दुर्भाग्य रहा है कि युग-युग में इसका नाम परिवर्तित हो रहा है। कभी 'वैदिक', कभी 'संस्कृत', कभी 'प्राकृत', कभी 'अपभ्रंश' और अब - हिन्दी।आलोचक कह सकते हैं कि 'वैदिक संस्कृत' और 'हिन्दी' में तो जमीन-आसमान का अंतर है। इस पर ध्यान देने योग्य है कि रूसी , चीनी, जर्मन और तमिल आदि जिन आकाशगंगा को 'बहुत पुराना' बताया जाता है, उनके भी प्राचीन और वर्तमान रूपों में ज़मीन-आसमान का अंतर है ; पर लोगों ने उन आकाशगंगा के नाम नहीं

www.ignited.in

बदले और उनके संशोधित स्वरूपों को 'प्राचीन', 'मध्यकालीन', 'आधुनिक' आदि कहा गया, जबकि 'हिन्दी' के सन्दर्भ में प्रत्येक युग की भाषा का नया नाम रखा जा रहा है।[3]

हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास के सम्बन्ध में प्रचलित धारणाओं पर विचार करते समय हमारे सामने हिन्दी भाषा की उत्पत्ति का प्रश्न दसवीं शताब्दी के आसपास की प्राकृतभास भाषा तथा अपभ्रंश भाषाओं की ओर जाता है। अपभ्रंश शब्द की व्युत्पत्ति और जैन रचनाकारों की अपभ्रंश कृतियों का हिन्दी से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए जो तर्क और प्रमाण हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थों में प्रस्तुत किये गये हैं उन पर विचार करना भी आवश्यक है। सामान्यतः प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश-अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव स्वीकार किया जाता है। उस समय अपभ्रंश के कई रूप थे और उनमें सातवीं-आठवीं शताब्दी से ही पद्य-रचना प्रारम्भ हो गयी थी। साहित्य की दृष्टि से पद्यबद्ध जो रचनाएँ मिलती हैं वे दोहा रूप में ही हैं और उनके विषय, धर्म, नीति, उपदेश आदि प्रमुख हैं। राजाश्रित कवि और चारण नीति, शृंगार, शौर्य, पराक्रम आदि के वर्णन से अपनी साहित्य-रुचि का परिचय दिया करते थे। यह रचना-परम्परा आगे चलकर शौरसेनी अपभ्रंश या 'प्राकृताभास हिन्दी' में कई वर्षों तक चलती रही। पुरानी अपभ्रंश भाषा और बोलचाल की देशी भाषा का प्रयोग निरन्तर बढ़ता गया। इस भाषा को विद्यापति ने देशी भाषा कहा है, किन्तु यह निर्णय करना सरल नहीं है कि हिन्दी शब्द का प्रयोग इस भाषा के लिए कब और किस देश में प्रारम्भ हुआ।[4]

3. आधुनिक काल (सन 1857 ईस्वी से अब तक)

i. दुनिया के अन्य देशों की तरह भारत में भी शुरू से साहित्य की रचना पद्य में ही होती थी। इसका कारण यह था कि मुद्रण और छपाई की सुविधा न होने के कारण गेयता (जिसे गाया जा सकता है) और लयता (जार लय हो) के कारण काव्य (पद्य) को याद कर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आसानी से सुरक्षित किया जा सकता था । गद्य को याद रखना थोड़ा कठिन था।

ii. रीतिकाल में पद्य और गद्य दोनों की भाषा ब्रजभाषा थी। आधुनिक काल में साहित्य गद्य और पद्य दोनों में समान रूप से लिखा जाने लगा। इसका कारण था अंग्रेज़ो के भारत आगमन के बाद मुद्रण और रेल जैसे यातायातके साधनोंका विकास। पत्रिकाओं और समाचारपत्रों के प्रकाशन से खड़ी बोली का विकास और तेज़ हो गया। इसी समय खड़ी बोली हिंदी ने ब्रजभाषा से साहित्यिक भाषा का स्थान ले लिया।

iii. ब्रजभाषा का विकास संपर्क भाषा (बोलचाल की भाषा) के रूप में नहीं पाया गया। बोली जनसाधारण (आम लोग) की भाषा थी। यह दिल्ली और उसके आस-पास के इलाकों में बोली जाती थी। सबसे पहले मुगल शासकों ने फरसी मिली महंगी बोली (जो बाद में चलकर रोस्ता , उर्दू कहलायी) को अपने शासन की भाषा के रूप में अपनाने और महंगी बोली को संपर्क की भाषा के रूप में विकसित किया।[5]

iv. फिर मुगल समाज़ के टूटने के बाद खाने की बोली हिंदी के पश्चिमी शहर (दिल्ली , आगरा, मेरठ आदि) से पूर्वी शहर (लखनऊ, वाराणसी, पूरत, मुर्शिदाबाद आदि) में लगी।

4. हिन्दी साहित्य के विकास के विभिन्न काल

हिन्दी साहित्य के विकास के विभिन्न कालको चार भागों में विभाजित किया गया है-

i. आदिकाल -(वीरगाथाकाल) सन 993 से 1918 तक, संवत् 1050 से 1375 तक

ii. पूर्व मध्यकाल -(भक्तिकाल) सन् 1318 से 1643 तक, संवत् 1375 से 1700 तक

iii. उत्तर मध्यकाल -(रीतिकाल) सन् 1643 से 1843, संवत् 1700 से 1900 तक

iv. आधुनिक काल - सन् 1843 से आज तक , संवत् 1900 से आज तक

i. आदिकाल

आदि काल का साहित्य (सी. 15वीं शताब्दी से पहले) कन्नौज, दिल्ली, अजमेर के क्षेत्रों में मध्य भारत तक फैला हुआ था। चंद बरदाई (1149 - सी। 1200) द्वारा लिखित एक महाकाव्य पृथ्वीराज रासो को हिंदी साहित्य के इतिहास में पहली कृतियों में से एक माना जाता है। चांद बरदाई घोर के मुहम्मद के आक्रमण के दौरान दिल्ली और अजमेर के प्रसिद्ध शासक पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि थे।[6]

www.ignited.in

कन्नौज के अंतिम शासक जयचंद्र ने स्थानीय बोलियों के बजाय संस्कृत को अधिक संरक्षण दिया। नैषधीय चरित्र के लेखक हर्ष उनके दरबारी कवि थे। जगनायक (कभी-कभी जगनिक), महोबा में शाही कवि , और नल्हा , अजमेर में शाही कवि , इस अवधि के अन्य प्रमुख साहित्यकार थे। हालाँकि, तराइन की दूसरी लड़ाई में पृथ्वीराज चौहान की हार के बाद , इस अवधि से संबंधित अधिकांश साहित्यिक कार्यों को घोर के मुहम्मद की सेना द्वारा नष्ट कर दिया गया था। इस काल के बहुत कम शास्त्र और पांडुलिपियाँ उपलब्ध हैं और उनकी सत्यता पर भी संदेह किया जाता है।

ii. पूर्व मध्यकाल

मध्ययुगीन हिंदी साहित्य भक्ति आंदोलन और लंबी , महाकाव्य कविताओं की रचना के प्रभाव से चिह्नित है।

भक्ति काल ने भी मुख्य रूप से कविता के पुराने रूपों के मिश्रण से कविता रूपों में महान सैद्धांतिक विकास को चिह्नित किया। इनमें दोहा (दो-पंक्ति) , सोरठा, चौपाया (चार-पंक्ति) आदि जैसे छंद पैटर्न शामिल थे। यह वह युग भी था जब विभिन्न रसों के तहत कविता की विशेषता थी। आदि काल (जिसे वीर गाथा काल भी कहा जाता है) के विपरीत, जिसे वीर रस (वीर काव्य) में काव्य की अधिक मात्रा की विशेषता थी , भक्ति युग ने कविता के बहुत अधिक विविध और जीवंत रूप को चिह्नित किया , जिसने रस के पूरे सरगम को फैलाया। श्रृंगार रस (प्रेम) , वीर रस (वीरता)।

भक्ति कविता के दो स्कूल थे - निर्गुण स्कूल (एक निराकार भगवान या एक अमूर्त नाम के विश्वासी) और सगुण स्कूल (विष्णु के अवतारों के गुणों और उपासकों वाले भगवान के विश्वासी)। कबीर और गुरु नानक निर्गुण स्कूल से संबंधित हैं, और उनका दर्शन आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत दर्शन से काफी प्रभावित था। वे निर्गुण निराकार ब्रह्म या निराकार निराकार की अवधारणा में विश्वास करते थे। सगुण स्कूल का प्रतिनिधित्व मुख्य रूप से सूरदास , तुलसीदास और अन्य जैसे वैष्णव कवियों द्वारा किया गया था और माधवाचार्य आदि की पसंद से प्रतिपादित द्वैत और विशिष्ट अद्वैत दर्शन का एक तार्किक विस्तार था।[7]

iii. उत्तर मध्यकाल

रीतिकाल में हिन्दी साहित्य में कामुक तत्त्व की प्रधानता हो गई। इस युग को रीति (जिसका अर्थ है 'प्रक्रिया') कहा जाता है क्योंकि यह वह युग था जब काव्यात्मक आंकड़े और सिद्धांत पूर्ण रूप से विकसित हुए थे। लेकिन कविता सिद्धांत पर इस जोर ने कविता के भावनात्मक पहलुओं को बहुत कम कर दिया- भक्ति आंदोलन की मुख्य विशेषता- और कविता की वास्तविक सामग्री कम महत्वपूर्ण हो गई। भक्ति युग का सगुण स्कूल दो स्कूलों (राम भक्ति और कृष्ण भक्ति) में कहीं भक्ति और रीति युग के अंतराल में विभाजित हो गया। हालाँकि अधिकांश रेती कार्य बाहरी रूप से कृष्ण भक्ति से संबंधित थे , लेकिन उनका जोर पूर्ण भक्ति से बदलकर कृष्ण के जीवन के श्रृंगार या कामुक पहलुओं - उनकी लीला , ब्रज में गोपियों के साथ उनकी शरारतें, और शारीरिक सुंदरता का वर्णन तक हो गया था। कृष्ण और राधा की, (कृष्ण की पत्नी)। बिहारी और घनानंद दास की कविताएं इस बिल में फिट बैठती हैं। इस युग की सबसे प्रसिद्ध पुस्तक बिहारी की बिहारी सतसई है , जो दोहों (दोहों) का संग्रह है , जो भक्ति (भक्ति) , नीती (नैतिक नीतियों) और श्रृंगार (प्रेम) से संबंधित है।

देवनागरी लिपि या नागरी लिपि का उपयोग करने वाली पहली हिंदी पुस्तकें ऐन-ए-अकबरी पर एक हीरा लाल का ग्रंथ था, जिसे ऐन ए अकबरी की भाषा वचनिका कहा जाता था, और कबीर पर रीवा महाराजा का ग्रंथ था। दोनों पुस्तकें 1795 में निकलीं। मुंशी लल्लू लाल का संस्कृत हितोपदेश का हिंदी अनुवाद 1809 में प्रकाशित हुआ था। लाला श्रीनिवास दास ने 1886 में नागरी लिपि में हिंदी परीक्षा गुरु में एक उपन्यास प्रकाशित किया था। शारदा राम फिल्लौरी ने एक हिंदी उपन्यास भाग्यवती लिखा था जो 1888 में प्रकाशित हुआ था।

iv. आधुनिक काल

1800 में, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की। कॉलेज के अध्यक्ष जेबी गिलक्रिस्ट ने हिंदुस्तानी में किताबें लिखने के लिए प्रोफेसरों को नियुक्त किया। इनमें से कुछ किताबें थीं लल्लू लाल की प्रेम सागर , सदल मिश्रा की नासिकेतोपाख्यान, दिल्ली के सदासुखलाल की सुखसागर और मुंशी इंशाल्लाह खान की रानी केतकी की कहानी। हिंदी गद्य साहित्य में यथार्थवाद लाने वाले मुंशी प्रेमचंद थे, जिन्हें हिंदी कथा साहित्य और प्रगतिशील आंदोलन की दुनिया में सबसे सम्मानित व्यक्ति माना जाता है। प्रेमचंद से पहले हिंदी साहित्य परियों या जादुई कहानियों , मनोरंजक कहानियों और धार्मिक विषयों के इर्द-गिर्द घूमता था। प्रेमचंद के उपन्यासों का कई अन्य भाषाओं में अनुवाद किया गया है।[8]

5. हिंदी भाषा आधुनिक काल में प्रगति

www.ignited.in

आधुनिक भाषा का विकास 18वीं सदी के अंत में शुरू हुआ। इस काल के प्रमुख लेखक सदासुख लाल और एंशाल्लाह खान थे। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने भी हिंदी भाषा को मजबूत किया। इसी तरह राजा लक्ष्मण सिंह ने शकुंतला का हिंदी में अनुवाद किया। कार्यालय का कार्य उर्दू में होने के कारण प्रतिकूल परिस्थितियों में हिन्दी का विकास होता रहा।[9]

हिंदी साहित्य के गद्य लेखकों में भारतेंदु हरीशचंद्र , महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचंद्र शुक्ल और श्याम सुंदर दास प्रमुख हैं। जय शंकर प्रसाद , मैथलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा , रामधारी सिंह 'दिनकर' और हरिबंस राय 'बच्चन' ने हिंदी कविता के विकास में महान योगदान दिया। इसी तरह प्रेम चंद , वृंदावन लाल वर्मा और एल्लाचंद्र जोशी ने उपन्यास लिखे और हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। यदि हम उपरोक्त लेखकों को देखें तो हम पाते हैं कि उन सभी ने एक उद्देश्य से लिखा है। स्वामी दयानंद ने हिंदू समाज को सुधारने और झूठी मान्यताओं और सामाजिक बुराइयों से छुटकारा पाने के लिए लिखा था। मुंशी प्रेम चंद ने गरीबों के दयनीय अस्तित्व की ओर समाज का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की और दूसरे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म विभूषण से सम्मानित महादेवी वर्मा ने समाज में महिलाओं की स्थिति पर प्रकाश डाला। 'निराला' आधुनिक भारत के जागरण के प्रणेता बने।[10]

6. निष्कर्ष

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में निरंतर और समसामयिक विकास की अवधि का प्रतिनिधित्व जयशंकर प्रसाद (छाया, आकाश दीप), राय कृष्ण दास और महादेवी वर्मा ने किया है। मुंशी प्रेमचंद (1880-1936) कथा साहित्य के सबसे बड़े निष्ठावान व्यक्ति थे। कथा साहित्य में उनकी अमर कृतियों में शामिल हैं: सेवासदन , प्रेमश्रम, निर्मला, कायाकल्प, रंगभूमि, घबन और गोदान। उनके अंतिम उपन्यास गोदान का भारत की सभी संभावित भाषाओं में अनुवाद किया गया है। समकालीन काल के अन्य महत्वपूर्ण काल्पनिक हिंदी लेखकों में शामिल हैं: जैनेंद्र कुमार (सुनीता और त्यागपत्र , सुखदा, विवर्त), फणीश्वर नाथ रेणु (मैला अंचल), सच्चिनंदा वात्स्यायन (शेखर एक जीवनी) , धर्मवीर भारती (सूरज का सतवन घोड़ा) , यश पाल (दादा-कॉमरेड , देश द्रोही , दिव्या और मनुष्य के रूपा) , जगदम्बा प्रसाद दीक्षित (मुर्दघर) और राही मासूम रज़ा (आधा गाँव)। साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र में डॉ. नागेंद्र और डॉ. नामवर सिंह सबसे सम्मानित नाम हैं। उपेंद्रनाथ 'अश्क', जगदीश चंद्र माथुर (कोणार्क) , लक्ष्मीनारायण लाल (सुखा सरोवर) और मोहन राकेश (आषाढ़ का एक दिन , लहरों के राजहंसा और अधे-अधूरे) हिन्दी के प्रसिद्ध आधुनिक नाटककार हैं।

संदर्भ

1. अभ्यंकर, एस.वी. (2015)। जे कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन का अध्ययन। पीएचडी थीसिस, एसजीयू, 1982-4
2. एसेन, ए। (2015)। रामायण हिन्दुओं की पुस्तक। न्यूयार्कः मोतीलाल बनारसीदास।
3. अलेक्जेंडर, आर। (2017)। संस्कृति और शिक्षाशास्त्र: प्राथमिक शिक्षा में अंतर्राष्ट्रीय तुलना। एमए: ब्लैकवेल पब्लिशर्स
4. अरबिंदो, एस। (2016)। "भारत में पुनर्जागरण" के साथ "भारतीय संस्कृति की नींव" में रामायण और महाभारत। एसएबीसीएल, खंड 14। पांडिचेरी: अरबिंदो आश्रम
5. बाशम, ए.एल. (2016)। आश्चर्य वह भारत था। लंदन: सिडविक और जैक्सन।
6. भट्ट, जेएम (2015)। विनोबा भावे के शैक्षिक दर्शन का एक अध्ययन। डॉक्टरल थीसिस , सरदार पटेल विश्वविद्यालय।
7. क्लेमेंट, एल.एस. (2017)। भारत की छवि गांधी, नेहरू और चौधरी की चुनिंदा कृतियां हैं। पीएच.डी. थीसिस , पांडिचेरी विश्वविद्यालय।
8. दीप्तिबेन, पी.पी. (2019)। गांधीवादी दर्शन जैसा कि उनके कार्यों में प्रकट हुआ और गांधीवादियों द्वारा व्यवहार में लाया गया। पीएच.डी. थीसिस , गुजरात विश्वविद्यालय।
9. गोयल, बी.एस. (2019)। ब्रिटिश भारत में शिक्षा का विकास (1905-1929)। अप्रकाशित थीसिस , दिल्ली विश्वविद्यालय।
10. झा, एच. (2018). वाल्मीकि रामायण के विशेष संदर्भ में प्राचीन भारत में शिक्षा। पीएच.डी. थीसिस। बिहार विश्वविद्यालय।

Corresponding Author

अंजलि श्योकंद*

Email - sehwaganjali@gmail.com